पाठ - बच्चे काम पर जा रहे हैं

शब्दार्थ-व्याख्या

1. कोहरे से ढँकी ..... जा रहे हैं बच्चे?

शब्दार्थ –

- **कोहरा** – धुंध
- **विवरण** – व्याख्या, स्पष्ट करना, वर्णन

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सुबह–सुबह जब पूरी सड़क पर धुंध छाई हुई है और कड़ाके की ठंड पड़ रही है। उस समय बच्चे काम पर जा रहे हैं। आशय यह है कि बच्चे मजदूरी करने के लिए या रोजी–रोटी कमाने के लिए घर से सुबह–सुबह ठण्ड में निकल कर काम पर जा रहे हैं।

कवि आगे कहते हैं कि बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह हमारे समय अर्थात वर्तमान की सबसे भयानक पंक्ति है। ऐसा कवि इसलिए कहते हैं क्योंकि जिस उम्र में बच्चों को खेलना–कूदना चाहिए, स्कूल जाना चाहिए, मौज मस्ती करनी चाहिए। उस समय वो अपने गरीब मां–बाप की जिम्मेदारियों को बांटने के लिए, अपने घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अपना बचपन कुर्बान कर रहे हैं और वो ऐसा करने के लिए विवश है, मजबूर हैं। इससे ज्यादा भयानक क्या हो सकता है। कवि इस समस्या से भयानक इस बात को मानते हैं कि हम लोग इस समस्या को एक विवरण की तरह लिखते हैं। अर्थात इस समस्या को किसी लेख की तरह लिखने से अथवा कागजों में आंकड़े इकट्ठे करने से कुछ भी हासिल नहीं होगा। हमें यह बात किसी सवाल की तरह पूछना चाहिए कि ऐसी क्या स्थितियां बन गई कि छोटे–छोटे बच्चों को पढ़ने लिखने, खेलने कूदने की उम्र में काम पर जाना पड़ रहा है। आखिर क्यों उनसे उनका बचपन छीन कर उन पर काम का बोझ डाला जा रहा है?

2. क्या अंतरिक्ष में ..... एकाएक

शब्दार्थ –

- **अंतरिक्ष** – पृथ्वी के वातावरण से बाहर
- **दीमक** – चींटी की जाति का सफ़ेद रंग का एक छोटा कीड़ा जो समूह में रहता है और कागज़, लकड़ी, पौधों आदि को खा जाता है
- **भूकंप** – भूचाल, पृथ्वी की सतह का हिलना
- **ढह** – गिरना, नष्ट होना
- **मदरसा** – विद्यालय

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि एक साथ कई सारे सवाल करते हुए कहते हैं कि क्या बच्चों के खेलने वाली सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गयी हैं या फिर उनकी रंग–बिरंगी सारी किताबों को दीमकों ने खा ली है। क्या बच्चों के सारे खिलौने किसी काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं या फिर सारे स्कूलों के भवन किसी भूकंप की कारण तहस–नहस हो गये हैं। क्या अचानक सारे खेल के मैदान, सारे बाग–बगीचे और घरों के आंगन खत्म हो गए हैं? कहने का आशय यह है कि बच्चों

egyanarchive

का बचपन खिलते हुए बीतना चाहिए, रंग–बिरंगी किताबों को पढ़ते हुए बीतने चाहिए। खिलौनों से खलते हुए बच्चे बड़े होने चाहिए। बच्चों को स्कूल जाना चाहिए, मैदानों में उछल–कूद करनी चाहिए, बाग़–बगीचों में शरारतें करनी चाहिए, घरों के आंगनों में चहल–पहल मचानी चाहिए। लेकिन ऐसा क्या हो गया है जिस वजह से इन बच्चों को अब काम पर जाना पड़ रहा है। कवि पूछते हैं कि आखिर क्यों इन बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है, क्या बच्चों के बचपन के सभी खेल व जगह समाप्त हो गए हैं?

3. तो फिर बचा ही क्या है ..... बच्चे काम पर जा रहे हैं।

शब्दार्थ –

- **हस्बमामूल** – यथावत, हमेशा की तरह

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अगर बच्चों की सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं और खेल के सभी मैदान खत्म हो गए हैं या बच्चों की किताबें दीमकों ने खा ली हैं, सभी स्कूल, बाग़–बगीचे व घरों के आँगन सभी समाप्त हो गए हैं, तो फिर दुनिया में बचा ही क्या हैं? कवि कहते हैं कि अगर यह सब सच होता , तो यह सच में बहुत भयानक होता। लेकिन इससे भी ज्यादा भयानक बात तो यह है कि बच्चों की सारी गेंदें, खेल के सभी मैदान, बच्चों की किताबें, सभी स्कूल, बाग़–बगीचे व घरों के आँगन, ये सब पहले जैसा ही, अपनी जगह यथावत है। अर्थात सभी कुछ मौजूद है। लेकिन सब कुछ पहले जैसा होने के बावजूद भी, इन बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है। यह सबसे ज्यादा भयानक बात है। दुनिया की हजारों सड़कों से, हर रोज हजारों बच्चे काम करने के लिए जा रहे हैं। बहुत छोटे बच्चे अपना बचपन भुलाकर काम करने के लिए जा रहे हैं।

प्रश्न अभ्यास

1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर- कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से बाल मजदूरी का चित्र उभरता है। बच्चों के प्रति चिंता और करुणा का भाव उमड़ता है। छोटी सी उम्र में ही इन्हें अपना और परिवार का पेट भरने के लिए न चाहते हुए भी इन बच्चों को इतना ठंड में सुबह-सुबह उठकर काम पर जाना पड़ रहा है।

2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए ?

उत्तर- बच्चों की इस स्थिति का जिम्मेवार समाज है। कवि द्वारा विवरण मात्र देकर उनके जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जा सकती। इसके लिए समाज को इस समस्या से जागरूक करने के लिए तथा ठोस समाधान ढूँढने के लिए बात को प्रश्न रूप में ही पूछा जाना उचित होगा। लोगो को बैठ विमर्श कर इस समस्या का उचित समाधान करना होगा।

egyanarchive

3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं ?

उत्तर- सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चों के वंचित रहने के मुख्य कारण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक मजबूरी है। समाज के गरीब तबके के बच्चों को न चाहते हुए भी अपने माता-पिता का हाथ बँटाना पड़ता है। जहाँ जीविका के लिए इतनी मेहनत करनी पड़े तब सुख-सुविधाओं की कल्पना करना असंभव सा लगता है।

4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तर- इस उदासीनता के कई कारण हैं। लोग आत्मकेंद्रित होने के साथ संवेदनहीन भी हो रहे हैं। उन्हें सिर्फ अपने काम से मतलब होता है। दूसरों के कष्टों को वे जानने समझने का प्रयास नहीं करते। कई लोगो में जागरूकता की भी कमी है। उन्हें यह भी नहीं पता की पढाई हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। वे सिर्फ ईश्वर और बच्चों के भाग्य को दोष देते हैं।

6. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर- बच्चे इस देश का भविष्य हैं। यदि बच्चे पढ़ लिख नहीं पाते तब हमारे देश की आने वाली पीढ़ी भी पिछड़ी होगी, देश का भविष्य अंधकारपूर्ण होगा। उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

रचना और अभिव्यक्ति

8. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए ? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए ?

उत्तर- मेरे विचार से बच्चों को काम पर बिलकुल नहीं भेजा जाना चाहिए। कारण बच्चों की उम्र कच्ची होती है। उनके मन भावुक है। बचपन खेलने-खाने और सीखने की उम्र होती है। उन्हें पर्याप्त कोमलता और संरक्षण की आवश्यकता होती है।

बच्चों को काम पर भेजना उनके बचपन को छीनना है। इसके चलते वे खेल, शिक्षा, और जीवन की उमंग से वंचित रह जाते हैं। उससे उनका शोषण होता है। इसलिए बचपन में सभी को पढ़ने, खेलने-कूदने का अवसर मिलने के साथ-साथ अन्य सुविधाएँ भी समान रूप में उपलब्ध होनी चाहिए।

egyanarchive